3 वर्षों के भीतर एथेनॉल मिश्रित पेट्रोल से चलेंगी गाड़ियां

बढ़ते प्रदूषण के प्रकोप को ध्यान में रखते हुए एनएचआई ने शुरू किया शोध

नगराज दर्पण समाचार

कानपुर। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान क्रमशः 2022 और 2025 तक पेट्रोल में इथेनॉल के 10त्र और 20त्र सम्मिश्रण को प्राप्त करने के उद्देश्य से इथेनॉल सम्मिश्रण (इथेनॉल ब्लेन्डिंग प्रोग्राम) में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। 2013-14 में 38 करोड़ लीटर ईथेनॉल के साथ सम्मिश्रण यह सिर्फ 1.53त्र था, लेकिन राष्ट्रीय जैव ईंधन नीति, 2018 की घोषणा के बाद, कार्यक्रम ने गति पकड़ी और 400 करोड़ लीटर से अधिक इथेनॉल के साथ 10त्र से अधिक सम्मिश्रण को इथेनॉल आपूर्ति वर्ष 2021-22 में प्राप्त किया गया है।इथेनॉल इकाइयों की स्थापना या विस्तार के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए तकनीकी इनपुट, राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर द्वारा भारत सरकार को प्रदान किए गए थे, जिसके परिणामस्वरूप आज इथेनॉल की उत्पादन क्षमता 947 करोड़ लीटर प्रति वर्ष तक पहुंच गई है जिसमें शीरा आधारित डिस्टिलरी से 619 करोड़ लीटर और अनाज-आधारित डिस्टिलरीज से 328 करोड़ लीटर इथेनॉल का उत्पादन शामिल हैं। इसके दिसंबर 2023 तक 1250 करोड़ लीटर और 2025 तक 1700 करोड़ लीटर प्रति वर्ष तक पहुंचने की उम्मीद है।20त्र सम्मिश्रण के परिणामस्वरूप जहाँ ग्रीन हाउस गैसों में कमी आएगी, वहीं आयातित जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता को कम करके देश की ऊर्जा सुरक्षा के साथ-साथ वर्ष 2025-26 से प्रति वर्ष ₹ 50,000 करोड़ से अधिक की विदेशी मुद्रा की बचत होगी। श्क्क्क की सफलता से किसानों और ग्रामीण अर्थव्यवस्था से लेकर चीनी उद्योग को लाभ हुआ है। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान के निदेशक नरेंद्र मोहन ने कहा कि इससे पहले, देश केवल अंतिम शीरे के माध्यम से इथेनॉल का उत्पादन कर रहा था, लेकिन अब सरकार की सकारात्मक नीतियों और राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर की सक्रिय तकनीकी सहायता के साथ, इथेनॉल का उत्पादन बी- हैवी शीरा, गन्ने का रस या सिरप और अनाज (चावल और मक्का) से किया जा रहा है। 2021-22 के दौरान कुल इथेनॉल उत्पादन का प्रमुख शेयर (60त्र) बी-हैवी शीर से और 20त्र प्रत्येक गन्ने के रस ,सीरप और अनाज से अनुमानित है। क्षतिग्रस्त खाद्य अनाज का उपयोग इस उद्देश्य के लिए बहुतायत से किया जा रहा है।विभिन्न माध्यमों से इथेनॉल उत्पादन में कुछ प्रारंभिक तकनीकी मुद्दे थे विशेष रूप से फर्मेन्टेशन और अपशिष्ट प्रबन्धन के चरणों में, जिसके लिए राष्ट्रीय शर्करा संस ने समाधान प्रदान किए। निदेशक, राष्ट्रीय शर्करा संस्था ने कहा कि संस्थान के विशेषज्ञ तकनीकी सहायता प्रदान करने और प्रक्रियाओं का निरीक्षण करने के लिए लगातार इथेनॉल इकाइयों का दौरा कर रहे हैं।

400 करोड़ लीटर इथेनाल, 10 फीसदी का लक्ष्य पाया

कानपुर, 6 दिसम्बर। राष्टीय शर्करा संस्थान में क्रमश 2022 और 2025 तक पेट्रोल में इथेनाल के 10 फीसदी और 20 प्रतिशत सम्मिश्रण को प्राप्त करने के उददेश्य से इथेनाल सम्मिश्रण कार्यक्रम (इथेनाल ब्लेन्डिग प्रोग्राम) में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। 2013-14 में 38 करोड़ लीटर इथेनाल के साथ सम्मिश्रण यह सिर्फ 1.53 प्रतिशत था। लेकिन राष्टीय जैव ईधन नीति-2018 की घोषणा के बाद कार्यक्रम ने गति पकड़ी और 400 करोड़ लीटर से अधिक इथेनाल के साथ 10 फीसदी से अधिक सम्मिश्रण को इथेनाल आपूति वर्ष 2021-22 में प्राप्त किया है। एनएसआई के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने बताया कि 20 प्रतिशत सम्मिश्रण के परिणाम स्वरूप जहां ग्रीन हाउस गैसो में कमी आएगी। वही आयतित जीवाश्म ईधन पर निर्भरता को कम करके देश की ऊर्जा सुरक्षा के साथ-साथ वर्ष 2025-26 से प्रति वर्ष 50 हजार करोड़ से अधिक की विदेशी मुद्रा की बचत होगी। ईबीपी की सफलता से किसानों और ग्रामीण अर्थव्यवस्था से लेकर चीनी उद्योग को लाभ हुआ है। इससे पहले देश केवल अंतिम शीरे के माध्यम से इथेनाल का उत्पादन कर रहा था लेकिन अब सरकार की सकारात्मक नीतियों और एनएसआई कानपुर की सक्रिय तकनीकी सहायता के साथ इथेनाल का उत्पादन बी-हैवी शीरा, गन्ने का रस या सिरप और अनाज (20 प्रतिशत) प्रत्येक गन्ने के रस या सीरप और अनाज से अनुमानित है। क्षतिग्रस्त खाद्य अनाज का उपयोग इस उददेश्य के लिए बहुतायत से किया जा रहा है। निदेशक ने कहाकि संस्थान के विशेषज्ञ तकनीकी सहायता प्रदान करने और प्रक्रियाओं का निरीक्षण करने के लिए लगातार इथेनाल इकाइयों का दौरा कर रहे है।

निरीक्षण के दौरान प्रो. नरेन्द्र मोहन व अन्य।

सार-संक्षेप

2025 तक 1700 लीटर प्रति वर्ष होगा इथेनॉल

कानपुर। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान (एनएसआई) की तकनीक और दिशा निर्देशों से देश में इथेनॉल की उत्पादकता में लगातार इजाफा हो रहा है। निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन के नेतृत्व में इथेनॉल इकाईयों की क्षमता बढ़ाई जा रही है। संस्थान के विशेषज्ञ इकाईयों को अपग्रेड करने में सहयोग कर रहे हैं। प्रो. नरेंद्र मोहन ने बताया कि 2013-14 में इथेनॉल का उत्पादन 38 करोड़ लीटर था। 2018 में राष्ट्रीय जैव ईंधन नीति के आने पर उत्पादन बढ़कर 400 लीटर पहुंच गया। यह पेट्रोल में सम्मिश्रमण के लिए 10 फीसद के आसपास था। 2022 में 947 करोड़ लीटर हो गया। यह दिसंबर 2023 तक 1250 करोड़ लीटर और 2025 तक 1700 करोड़ लीटर प्रतिवर्ष होने का अनुमान है। इथेनॉल का उत्पादन शीरा और अनाज आधारित डिस्टिलरी कर रही हैं।

50 हजार करोड़ की होगी बचत : प्रो. नरेंद्र मोहन के मुताबिक पेट्रोल में 20 फीसद सम्मिश्रण से जहां ग्रीन हाउस गैसों में कमी आएगी, वहीं जीवाश्यम ईंधन पर निर्भरता कम हो जाएगी। 2025-26 तक प्रति वर्ष 50 हजार करोड़ से अधिक की विदेशी मुद्रा की बचत होगी।